



ISSN 2277-4157

Central India Journal of Historical and Archaeological Research

CIJHAR

A Peer Reviewed And
An International Journal

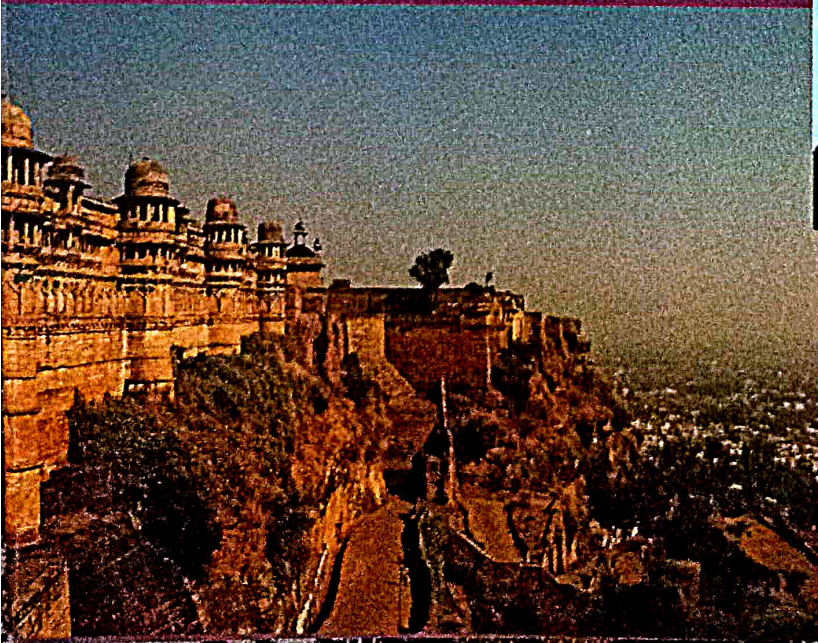
Vol. 6

January-March 2017

No. 21

Editor

Dr. Vinay Shrivastava



**Central India Journal of
Historical And
Archaeological
Research
(CIJHAR)**

**A Peer Reviewed Journal
An International Journal**

**Volume VI,
Number 21
January-March, 2017**

**Editor
Dr. Vinay Shrivastava**

**Vidya Career Research Foundation
Panna-488001**

Registration No. 06/11/01/10381/14

प्राचीन भारतीय इतिहास

- 35 संस्कृत वाङ्मय में राज्याङ्ग-दर्शन : एक अवलोकन 163
डॉ. घनश्याम महतो
- 36 महर्षि वेद व्यास के सामवेदीय शाखा प्रवर्तक - शिष्य एवं ऋषि परम्परा 168
डॉ. प्रीति बागड़े
- 37 वाल्मीकीय रामायण में वर्णित अधिकारों का अध्ययन 172
डॉ. मोना

मध्यकालीन भारतीय इतिहास

- 38 मध्यकालीन संगीत में अमीर खुसरो का योगदान 177
डॉ. पीयूषा वैद्य
- 39 राजा मानसिंह तोमर की सांस्कृतिक उपलब्धियां 183
प्रो. मीना श्रीवास्तव
- 40 भरतपुर क्षेत्र से प्राप्त शैव प्रतिमाएँ 189
डॉ. मीना कुमारी जाँगिड
- 41 लोक आस्था के प्रतीक : हजरत निजामुद्दीन औलिया 194
डॉ. अलीमा शहनाज सिद्दीकी

आधुनिक भारतीय इतिहास

- 42 राष्ट्र-निर्माण की कड़ी में चम्पारण 199
डॉ. पूनम वर्मा
- 43 स्वेदशी आंदोलन के प्रणेता बिपिन चंद्र पाल: एक समीक्षात्मक मूल्यांकन 204
डॉ. अंजनी कुमार झा
- 44 संताल परगना के लोगों में चेतना लाने में समाचार-पत्रों की भूमिका; 209
1855-1905 ई.
संजीत कुमार
- 45 1857 की क्रान्ति में रेवाड़ी तथा आस-पास के क्षेत्र का योगदान 214
प्रदीप

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

- 46 नेपाल-मधेशी सम्बन्ध 217
शोभा कुमारी

महर्षि वेदव्यास के सामवेदीय शाखा प्रवर्तक - शिष्य एवं ऋषि परम्परा

डॉ. प्रीति बागड़े

सारांश

पौराणिक शाखा प्रकरण में सुकर्मा के तीन शिष्य कहे गये हैं, यथा पौण्ड्यिञ्जि, हिरण्यनाभ कौसल्य तथा आवन्त्य। पुराणों में पौण्ड्यिञ्जि के लगभग 7 शिष्य ज्ञात होते हैं यथा लौगाक्षि कुथुमि लाङ्गलि कुक्षिकुल्य, नौधमि तथा कुक्षीवान्। वायुपुराण तथा ब्रह्माण्ड पुराण में कुथुमि के तीन शिष्यों में एक पाराशर थे। पाराशर के तीन अन्य शिष्य हुए हैं, यथा आसुरायण प्राचीन योगपुत्र पतञ्जलि। इसी प्रकार लौगाक्षि के भी तीन शिष्य हुए ताण्डिपुत्र, सात्यपुत्र तथा राणायनीय। वायुपुराण तथा ब्रह्माण्ड पुराण में लाङ्गलि के शिष्य भालुकि का नाम मिलता है, संभवतः यह भाल्लवि है। वायुपुराण तथा ब्रह्माण्ड पुराण में भी हिरण्यनाभ के शिष्य कृत-नृप और उनके “24” शिष्य उल्लेखित हैं। विष्णुपुराण में भी हिरण्यनाभ के ही 500 उदीच्य सामग और 500 प्राच्य सामग शिष्य कहे गये हैं। इस प्रकार महर्षि वेद व्यास (कृष्णद्वैपायन) की सामवेदीय शाखा के शिष्य-प्रशिष्य एवं उनकी ऋषि परम्परा पुराणों इत्यादि के माध्यम से ज्ञात होती है।

सामवेदीय शाखा प्रसंग में जैमिनि को व्यास का प्रथम सामशाखा प्रवर्तक शिष्य माना गया है विष्णु पुराण¹ तथा भागवतपुराण² के अनुसार जैमिनि का प्रथम सामग शिष्य सुमन्तु है। इन्हीं पुराणों में सुमन्तु को जैमिनि का पुत्र भी कहा गया है। वैदिक परम्परा में शिष्य के रूप में पुत्र का उल्लेख बहुधा मिलता है। अतः यह संभव है। सुमन्तुकृत शाखा के विषय में पुराणों की कुछ भी सामग्री नहीं मिलती है। यद्यपि अथर्ववेद शाखा का प्रथम प्रवर्तक व्यास शिष्य भी सुमन्तु हैं, यद्यपि ये दोनों भिन्न सुत्वा हुए हैं।³ भागवतपुराण⁴ में इसके लिए “सुन्वान” पाठ मिलता है जिनको स्पष्टतः सुमन्तु-सुत कहा गया है।

Note- Research paper Received in July 2016 and Reviewed in November 2016

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश